आचार्य बिम्ब विधान

माण्डला

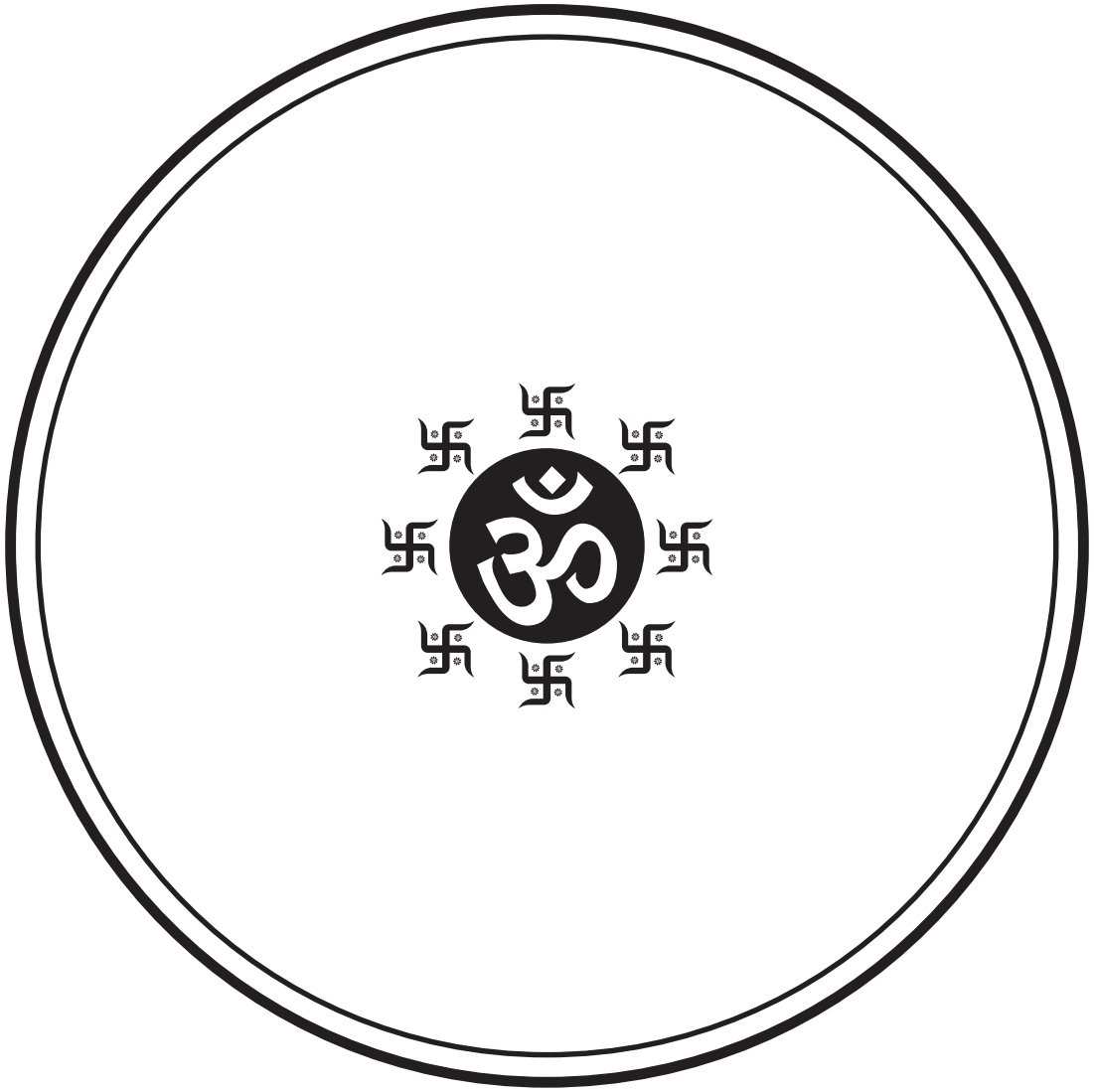

मध्य में – ॐ
कुल – 108 अर्घ्य

रचयिता :

प. पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति	:	श्री णमोकार अष्टोत्तरशत् नामाक्षर पूजन
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम 2022, प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी – मो.: 9829076085 ब्र. आस्था दीदी – मो.: 9660996425 ब्र. सपना दीदी – मो.: 9829127533
संयोजन	:	ब्र. आरती दीदी – मो.: 8700876822
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, मो.: 9413336017 2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर–3 रोहिणी, दिल्ली मो.: 9810570747 3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879

पुण्यार्जक :

आचार्य बिम्ब की शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्य-3 श्री वीतरागाय नमः श्री परम्पराचार्याय नमः।
श्री विमल सिन्धु गुरवे नमः।

''वीतराग जगत पूज्यं, पंचाचार परायणाः।
विशद शांति प्रदायं, शांतिधारा करोम्यहं।।''

ॐ ह्रूँ परम गुरवे नमः परम्पराचार्य गुरवे नमः परम वीतराग स्वरूप सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञानाय, सम्यक् चारित्र, रत्नत्रय स्वरूपाय नमः पंच महाव्रत, पंच समिति, पंच इन्द्रिय विजयी, षडावश्यक, सप्तशेषगुण, अष्टाविंशति व्रत धारकाय नमः। अंग बाह्य-अंग प्रविष्टि रूप श्रुत निरताय, बाह्याभ्यंतर द्वादश सुतप धारकाय, उत्तम क्षमादि दश धर्म संयुक्ताय, मन-वचन-काय त्रय गुप्ति संयुक्ताय नमः, सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप, वीर्य, पंचाचार सहिताय नमः समता, वन्दना, स्तुति, स्वाध्याय, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग षट्कर्त्तव्य, षड्त्रिंशत गुण निपुणाय, विमल गुणार्णवाय विराग भाव सहिताय, वात्सल्य गुण संयुक्ताय, विशद सम्यक्त्व प्रदायकाय, सम्यग्ज्ञान प्रदायकाय, जिनधर्म प्रभावकाय, चैतन्य तीर्थ चारित्र शिरोमणये, ज्योति पुंज, पतितोद्धारक, करुणानिधये, अतिशय योगी, परं तीर्थ सुवंदकाय, नमः, सर्व मुनि-आर्यिका-श्रावक-श्राविका, चतुःसंघोपसर्ग विनाशनाय सर्व

जीवानां कष्ट निवारणाय मम..... (शांतिधाराकर्त्ता का नाम) **अपवायं-अस्माकं-** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **मृत्युं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **अतिकामं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **रतिकामं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **क्रोधं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **अग्निभयं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्वोपसर्गं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व विघ्नं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व भयं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व राज्यभयं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व चौर भयं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व दुष्टभयं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व मृगभयं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्वात्म चक्र भयं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व परमंत्रं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व शूलरोगं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व क्षय रोगं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व कुष्ट** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व क्रूर रोगं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व नरमारीं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व गजमारीं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्वाश्वमारीं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व गौमारी** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व महिषमारीं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व धान्यमारीं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व वृक्षमारीं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व गुलमारीं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व पत्रमारीं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व पुष्पमारीं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व फलमारीं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द,

सर्व राष्ट्रमारीं छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व देशमारीं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व विषमारीं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व वेताल शाकिनीभयं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व वेदनीयं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व माहनीयं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व मोहनीयं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व दुर्भाग्यं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द, **सर्व कर्माष्टकं** छिन्द छिन्द भिन्द भिन्द।

ॐ ह्रूँ संघनायक यतीन्द्र संयम पराक्रमाय, तेजो-बल-शौर्य- वीर्य-शांतिं कुरु कुरु, भो आचार्या! सुभिक्षं कुरु कुरु, मनः समाधिं कुरु कुरु, सुयशः कुरु कुरु, सौभाग्यं कुरु कुरु, अभिमतं कुरु कुरु, पुण्यं कुरु कुरु, विद्यां कुरु कुरु, आरोग्यं कुरु कुरु, श्रेयः कुरु कुरु, सौहार्दं कुरु कुरु, सर्व अरिष्ट ग्रहादीन अनुकूलय-अनुकूलय, कदली घात मरणं-घातय घातय, आयुर्द्राघय-द्राघय, सौख्यं-साधय-साधय, सर्व दुखं हन हन, दह-दह, पच-पच, पाचय-पायच, कुट-कुट, शीघ्रं शीघ्रं।

''यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेम मारोग्यं, स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥''

श्री शांतिरस्तु-शिवमस्तु-जयोस्तु-नित्य-मारोग्य-मस्तु-मम तुष्टि-पुष्टि समृद्धिरस्तु।

कल्याणमस्तु-सुखमस्ऽभिवृद्धि-रस्तु- दीर्घायुरसतु-कुलगोत्र धनादि सन्तु।।

ॐ ह्रूँ नमः श्री गुरु बिम्बाभिषेक मंत्रेण नवग्रह शान्त्यर्थं गंधोदक धारावर्षणम् ।

ॐ ह्रूँ (लघु शांतिमंत्र) णमो आयरियाणं श्री .....सागराय नमः सम्पूर्ण कल्याण रूप मोक्ष पुरुषार्थश्च भवतु ॐ णमो गुरुदेवाय दिव्य तेजो मूर्तये सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र तप वीर्य पंचाचार्याय नमः सर्व विघ्न विनाशनाय, सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय, सर्व परकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय, सर्व क्षामडामर-विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा।

शांतिं करोतु परमं यतिनां गणस्य, शांति करोतु निरतं जिन भक्तिकानां।।
शांति करोतु सततं जनपस्य दातुं, शांति करोतु विशदं कृत शांति धारा।।
संपूजकानां व्रतधारकानां, निर्वाणमार्गानुरतो गृहाणाम्।
सर्वस्य संघस्य नगरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं विमलयतीन्द्रः।।

।। इति आचार्य श्री विमलसागरशान्तिमन्त्रम् ।।

आचार्य श्री बिम्ब पंचामृत अभिषेक

दोहा- राही मुक्ती मार्ग के, परमेष्ठी आचार्य।
जिनकी प्रतिमा का न्हवन, करें जगत के आर्य।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

तिलक मंत्र

दोहा- नव कोटी से शुद्ध हो, धारें निज परिधान।
तिलक करें नव अंग में, करने गुरु गुणगान।।

ॐ ह्रीं नवांग तिलकं अवधारयामि स्वाहा।

पीठ प्रक्षालमंत्र

दोहा- प्रासुक जल लेकर करें, प्रथम पीठ प्रच्छाल।
हाथ जोड़कर भाव से, विनत झुकाएँ भाल।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्रीकार लेखन

दोहा- अंकन स्वस्तिक का करें, चंदन लेकर हाथ।
प्रतिमा स्थापित करें, विनय भाव के साथ।।

ॐ ह्रीं पाण्डुकशिला पीठे श्रीकारलेखनं करोमि स्वाहा।

गुरुबिम्ब स्थापना मंत्र

दोहा- स्थापन गुरुबिम्ब का, करते यहाँ महान।
भक्ती करते भाव से, करने निज कल्याण।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं स्वस्तिकोपरि गुरु प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

अर्घ्य

दोहा-जल गंधदिक द्रव्य का, अर्घ्य चढ़ाते आज।
भक्ती का फल प्राप्त हो, पायें शिव समराज्य।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं स्वस्तिकोपरि गुरु प्रतिमास्थापनं करोमि
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु बिम्ब अभिषेक

(ज्ञानोदय छन्द)

वीतराग मुद्रा को धारें, पालन करते पंचाचार।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, परमेष्ठी पावन आचार्य।।
अविकारी मुद्रा शुभ जिनकी, देवे शिव पद का सोपान।
जैनाचार्य की प्रतिमा का हम, करते हैं अभिषेक महान।।

ॐ ह्रूँ श्रीं क्लीं ऐं गुरुबिम्बं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतरजलेन अभिषेचयामि नमः स्वाहा।

इक्षुरसाभिषेक

इच्छु रस लेकर करें, गुरु प्रतिमा अभिषेक।
यही भावना भा रहे, जीवन हो मम् नेक।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर इक्षुरसेन अभिषेचयामि नमः स्वाहा।

दाड़िम रसाभिषेक

दाड़िम से गुरुबिम्ब का, करते हम अभिषेक।
भाते हैं यह भावना, जागे परम विवेक।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर दाड़िमरसेन अभिषेचयामि नमः स्वाहा।

नरियल रसाभिषेक

नरिकेल रस से करें, गुरु प्रतिमा अभिषेक।
भाते हैं यह भावना, जागे परम विवेक।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर नारिकेल अभिषेचयामि नमः स्वाहा।

नारंगी रसाभिषेक

नारंगी रस से करें, गुरु प्रतिमा अभिषेक।
भाते हैं यह भावना, जागे परम विवेक।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर नारंगीरसेन अभिषेचयामि नमः स्वाहा।

सेव रसाभिषेक

सेव के रस से हम करें, गुरु प्रतिमा अभिषेक।
भाते हैं यह भावना, जागे परम विवेक।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर सेवरसेन अभिषेचयामि नमः स्वाहा।

विभिन्न रसाभिषेक

(.....) रस से करें, गुरु प्रतिमा अभिषेक।
भाते हैं यह भावना, जागे परम विवेक।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर (.....रसेन) अभिषेचयामि नमः स्वाहा।

घृताभिषेक

घृत के द्वारा हम करें, गुरु प्रतिमा अभिषेक।
भाते हैं यह भावना, जागे परम विवेक।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर घृतेन अभिषेचयामि नमः स्वाहा।

दुग्धभिषेक

दूध के द्वारा हम करें, गुरु प्रतिमा अभिषेक।
भाते हैं यह भावना, जागे परम विवेक।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर दुग्धेन अभिषेचयामि नमः स्वाहा।

दध्याभिषेक

दधि के द्वारा हम करें, गुरु प्रतिमा अभिषेक।
भाते हैं यह भावना, जागे परम विवेक।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर दध्येन अभिषेचयामि नमः स्वाहा।

सर्वौषधि अभिषेक

सर्वौषधि से हम करें, गुरु प्रतिमा अभिषेक।
भाते हैं यह भावना, जागे परम विवेक।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर सर्वौषधि अभिषेचयामि नमः स्वाहा।

चार कलश से अभिषेक

चार कलश से हम करें, गुरु प्रतिमा अभिषेक।
भाते हैं यह भावना, जागे परम विवेक।।

ॐ ह्रूँ आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे ....देशे....नाम.....नगरे... ....एतद्.....जिनचैत्यालये वीर नि. सं.....मासोत्तममासे....मासे....पक्षे.... तिथौ.....वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक-श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं गुरु बिम्ब चतुः कलशेन जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा।

सुगंधित कलशाभिषेक करें

करें सुगन्धित कलश से, गुरु प्रतिमा अभिषेक।
भाते हैं यह भावना, जागे परम विवेक।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर सुगंधित कलश अभिषेचयामि नमः स्वाहा।

चन्दन लेपन

चन्दन लेपन हम करें, गुरु प्रतिमा पर आज।
भाते हैं यह भावना, पाएँ शिव का ताज।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर चंदन लेपनं करोमि स्वाहा।

पुष्पवृष्टि

पुष्पांजलि करते विमल, प्रतिमोपरि शुभकार।
विशद भाव से भक्त सब, बोलें जय जयकार।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर पुष्पवृष्टि करोम्हं।

मंगल आरती अवतरण

करें आरती अवतरण, श्री गुरुवर के अग्र।
भक्त सभी जो हैं विशद, मिलकर करें समग्र।।

ॐ ह्रूँ गुरु बिम्ब पवित्रतर मंगल आरती अवतरण करोम्हं।

अभिषेक का भजन

(तर्ज–मैने श्री जी के चरण....)

हम तो प्रासुक जल भर लाए, हम तो न्हवन कराने आए।
जन्म जन्म के पाप लगे जो, वे हरने को आए हम।।
हम तो.....।।टेक।।
पंचाचार के धारी गुरुवर, मोक्ष मार्ग अपनाए।
मोक्षमार्ग के राही अनुपम, पावन मंगल गाए।।1।।
वीतराग मुद्रा है जिनकी, जन–जन के मन भाए।
दर्शन करके भवि जीवों का, हृदय कमल खिल जाए।। हम...।।2।।
बारह तप दश धर्म के धरी, षड् आवश्यक पाएँ।
छत्तिस मूल गुणों को पाके, आतम ध्यान लगाएँ।। हम...।।3।।
परम पूज्य गुरुवर की प्रतिमा, अविकारी कहलाए।
नीर क्षीर घृत रस लेकर के, न्हवन हेतु हम आए।। हम...।।4।।
धन्य दिवस है धन्य घड़ी जो, गुरु के दर्शन पाए।
विशद जगे सौभाग्य हमारे, हर्ष हर्ष गुण पाए।। हम...।।5।।

आचार्य श्री सन्मति सागर जी पूजन

आदिसागर श्री महावीर कीर्ति, के हैं प्रथम शिष्य गुणावान।
विमल सागर जी से दीक्षा ले, सन्मति सागर पाया नाम।।
पट्टाचार्य श्री महावीर कीर्ति, के तृतिय बन पट्टाचार्य।
गुरु परस्वी सम्राट कहाए, पद में झुके जगत के आर्य।।

दोहा- आयो पधारो मम हृदय, हे गुरु देव! महान।
दो आशीष हमको गुरो!, करो मेरा कल्याण।।

ॐ ह्रूँ तपस्वीसम्राट सन्मतिसागराचार्य अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

चारों गतियों में भटके हैं, शांति नहीं मिल पाई है।
विषयों को सुख समझा किन्तू, वे ही दुख की खाई हैं।।
परम पूज्य सन्मतिसागर जी, अनुपम सन्मति धारी हैं।
तीन योग से जिनके चरणों, अतिशय ढोक हमारी हैं।।1।।

ॐ ह्रूँ तपस्वीसम्राट सन्मतिसागराचार्य जलं निर्वपामीति स्वाहा।

झुलस रहे हम भवाताप में, निज में ज्वाला धधक रही।
भटके हैं अज्ञान तिमिर में, राह ना हमको मिली सही।।
परम पूज्य सन्मतिसागर जी, अनुपम सन्मति धारी हैं।
तीन योग से जिनके चरणों, अतिशय ढोक हमारी हैं।।2।।

ॐ ह्रूँ तपस्वीसम्राट सन्मतिसागराचार्य चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

खोटी इच्छाओं ने मेरा, मन मैला कर डाला हैं।
किया कषायों ने चेतन को, काल अनादी काला है।।
परम पूज्य सन्मतिसागर जी, अनुपम सन्मति धारी हैं।
तीन योग से जिनके चरणों, अतिशय ढोक हमारी हैं।।3।।

ॐ ह्रूँ तपस्वीसम्राट सन्मतिसागराचार्य अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

काम रोग की ज्वाला जलकर, चेतन के गुण जला रही।
शांत किया है उसको, जितना उतना देवे कष्ट सही।।
परम पूज्य सन्मतिसागर जी, अनुपम सन्मति धारी हैं।
तीन योग से जिनके चरणों, अतिशय ढोक हमारी हैं।।4।।

ॐ ह्रूँ तपस्वीसम्राट सन्मतिसागराचार्य पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गती में भटकाए हम, क्षुधा रोग ने घेरा है।
भाँति-भाँति की इच्छाओं ने, डाला मन पर डेरा है।।
परम पूज्य सन्मतिसागर जी, अनुपम सन्मति धारी हैं।
तीन योग से जिनके चरणों, अतिशय ढोक हमारी हैं।।5।।

ॐ ह्रूँ तपस्वीसम्राट सन्मतिसागराचार्य नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यातम ने शुद्धातम को, किया हमेशा काला है।
ज्ञान दीप जलते ही हटता, लगा मोह का जाला है।।
परम पूज्य सन्मतिसागर जी, अनुपम सन्मति धारी हैं।
तीन योग से जिनके चरणों, अतिशय ढोक हमारी हैं।।6।।

ॐ ह्रूँ तपस्वीसम्राट सन्मतिसागराचार्य दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के व्यापारों में मेरा, मन दर-दर पर भटका है।
मन की चाह मिटाने को नित, कहाँ ना माथा पटका हैं।।
परम पूज्य सन्मतिसागर जी, अनुपम सन्मति धारी हैं।
तीन योग से जिनके चरणों, अतिशय ढोक हमारी हैं।।7।।

ॐ ह्रूँ तपस्वीसम्राट सन्मतिसागराचार्य धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ भाव का फल पाके सब, दुर्गति में ही गिरते हैं।
पूर्ती करने इच्छाओं की, अन्जाने हो फिरते हैं।।
परम पूज्य सन्मतिसागर जी, अनुपम सन्मति धारी हैं।
तीन योग से जिनके चरणों, अतिशय ढोक हमारी हैं।।8।।

ॐ ह्रूँ तपस्वीसम्राट सन्मतिसागराचार्य फल निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अष्ट द्रव्य का, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
पद अनर्घ्य पा जाएँ हम भी, प्रभु दर पे हम आए हैं।।
परम पूज्य सन्मतिसागर जी, अनुपम सन्मति धारी हैं।
तीन योग से जिनके चरणों, अतिशय ढोक हमारी हैं।।9।।

ॐ ह्रूँ तपस्वीसम्राट सन्मतिसागराचार्य अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा जो करें, पावें शांती अपार।
शिवपद के राही बनें, होवें भव से पार।।

।। शान्तेय-शान्तिधारा ।।

दोहा- पुष्पांजलिं करते विशद, लेकर पावन फूल।
कर्म अनादी से लगे, हो जाते निर्मूल।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा- जयमाला के लाडले, प्यारे लाल के लाल।
सन्मति सिन्धु आचार्य की, गाते हैं जयमाल।।

(ज्ञानोदय-छन्द)

भारत देश उत्तर प्रदेश में, एटा नगर फफोतू ग्राम।
प्यारे लाल माता जयमाला, ओम प्रकाश पुत्र का नाम।।
माघ शुक्ल की तिथी सप्तमी, सन उन्नीस सौ अड़तीस जान।
विद्यालय में जाकर पाया, ओम प्रकाश ने लौकिक ज्ञान।।1।।
सन उन्निस सौ बासठ सन में, कार्तिक शुक्ल द्वादशी मान।
तीर्थराज सम्मेद शिखर मे, मुनि दीक्षा गुरु पाए महान।।
एक वर्ष के बाद आपने, गुरुणांगुरु के साथ विहार।
करके किए कठोर साधना, ज्ञान जगाए भली प्रकार।।2।।
माघ कृष्ण तृतिया को गुरुवर, महावीर कीर्ति जी आचार्य।
किए समाधी महसाणा में, बने आप तब पट्टाचार्य।।
तपः साधना त्याग मार्ग से, किया आपने निज श्रृंगार।
अन्न रसों का त्याग किए गुरु, तप, वृद्धी की विविध प्रकार।।3।।
साधिक दो सौ दीक्षाएँ दे, किए जगत जन का कल्याण।
परम तपस्वी सदी ईश्वी के, कहलाए गुरु महान।।
कई आचार्य आपसे बनकर, जैन धर्म का करें प्रचार।
मुनी आर्यिका बने अनेकों, भक्त करें गुरु की जयकार।।4।।

महाराष्ट्र में नगर कुंजवन, में गुरुवर का रहा प्रवास।
दो हजार दश माघ कृष्ण की, चौथ को पाए समाधी वास।।
ऐसे परम तपस्वी गुरु का, करते हैं हम भी गुणगान।
विशद भावना भाते हैं यह, हम भी पाए शिव सोपान।।5।।

दोहा- सुपथ प्रदायक हे गुरु, बनें सभी के आप।
तव तक तन में श्वाँस है, करते रहेंगे जाप।।

ॐ ह्रूँ तपस्वीसम्राट सन्मतिसागराचार्य जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- महिला गाएँगे सभी, जब तक सूरज चंद।
पूजा करके आपकी, हृदय जगा आनन्द।।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।